23 feb ravivar page 1 FINAL_Layout 1 21-Feb-25 6:58 PM Page 1

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रविवार 23 फरवरी 2025

विशेषः राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, 28 फरवरी

हमारे सौर मंडल में एक प्राकृतिक सूरज तो है ही, जिससे असीमित ऊर्जा निरंतर निकलती रहती है। लेकिन अब भारतीय वैज्ञानिकों समेत दुनिया के कई देशों के वैज्ञानिक मिलकर एक कृत्रिम छोटा सूरज यानी मिनी सन का निर्माण कर रहे हैं। कैसा है धरती का यह सबसे बड़ा और महंगा प्रोजेक्ट, कैसे करेगा यह अपना कार्य? इसके बारे में आप जरूर जानना चाहेंगे।

भारतीय वैज्ञानिकों की मदद से बन रहा

धरती पर पहला मिनी सन

कवर स्टोरी
अपराजिता

हाल ही में फ्रांस यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ इंटरनेशनल थर्मोन्यूक्लियर एक्सपेरिमेंटल रिएक्टर (आईटीईआर) यानी दुनिया के उस प्रोजेक्ट को देखने गए, जिसके तहत धरती में कृत्रिम 'मिनी सूरज' बनाने की कोशिश हो रही है। यह कोशिश दुनिया के कई देशों के वैज्ञानिक मिलकर कर रहे हैं, जिनमें भारतीय भी हैं।

सबसे बड़ा-महंगा प्रोजेक्टः दुनिया के इस सबसे बड़े एक्सपेरिमेंटल प्रोजेक्ट की शुरुआत साल 2006 में फ्रांस के राष्ट्रपति भवन एलिसी पैलेस में हुई, जहां दुनिया के कई देश इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट पर साथ-साथ काम करने को राजी हुए। ये देश थे- अमेरिका, यूरोपीय यूनियन के देश, रूस, चीन, भारत और दक्षिण कोरिया। आज इस प्रोजेक्ट में 30 देश अपना योगदान दे रहे हैं।

हमारा देश न केवल इस प्रोजेक्ट की लागत में हिस्सेदारी कर रहा है, बल्कि हमारे कई वैज्ञानिक इस प्रोजेक्ट की कोर टीम का हिस्सा भी हैं। दरअसल, सूरज में जिस प्रक्रिया से ऊर्जा उत्पन्न होती है, इस प्रोजेक्ट का मकसद उसी प्रक्रिया से बिजली उत्पन्न करना है। एक तरह से वैज्ञानिक धरती में कृत्रिम 'मिनी सूरज' बनाने की कोशिश कर रहे हैं। यह अब तक का दुनिया का सबसे महंगा और महत्वाकांक्षी एक्सपेरिमेंटल प्रोजेक्ट है, जो अगर सफल हुआ तो असीमित मात्रा में बिजली पैदा करेगा।

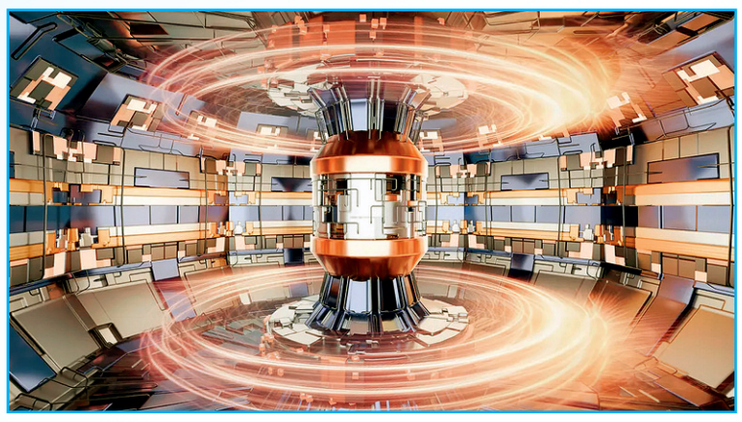

असीमित ऊर्जा का होगा उत्पादनः इस प्रोजेक्ट के तहत दुनिया की सबसे बड़ी 'टोकामक' बनाई जा रही है। टोकामक रशियन शब्द है, जिसका मतलब एक ऐसी मशीन है, जिसका इस्तेमाल परमाणु नाभिकीय संलयन से ऊर्जा पाने के लिए किया जाता है। वास्तव में यह एक एक्सपेरिमेंटल डिवाइस है, इसमें चुंबकीय क्षेत्र का इस्तेमाल करके प्लाज्मा को 'डोनट' के आकार में सीमित कर दिया जाता है। इस आकार को वैज्ञानिकों की भाषा में टोरस कहते हैं। यह वैक्यूम वेसल 'सुपरकंडक्टिंग मैग्नेट' होता है। टोकामक में गरम प्लाज्मा को एक निश्चित आयतन में बनाए रखने के लिए डिजाइन किया गया होता है। टोकामक में बनी ऊर्जा बर्तन की दीवारों में गर्मी के रूप में अवशोषित होती है। इसे थर्मल इंसुलेशन के लिए बड़े क्रायोस्टेट में रखा जाता है। इस प्रोजेक्ट से जुड़े वैज्ञानिकों का अनुमान है कि प्रोजेक्ट के सफल होने पर इस पावर प्लांट से 500 मेगावाट न्यूक्लियर एनर्जी का उत्पादन किया जाएगा।

आसान नहीं है यह प्रोजेक्टः इस प्रोजेक्ट का लक्ष्य है, न्यूक्लियर फ्यूजन यानी परमाणु संलयन में महारत हासिल करना। न्यूक्लियर फ्यूजन, सूर्य और बाकी तारों में होने वाली एक प्रक्रिया है, जिससे उनमें गर्मी पैदा होती है। हालांकि पृथ्वी पर न्यूक्लियर फ्यूजन की नकल करके एक मिनी सूरज बना लेना बेहद मुश्किल है। यदि ऐसा हो गया तो हमें असीमित मात्रा में ऊर्जा मिल सकती है। साथ ही यह ऊर्जा जीवाश्म ईंधन की तरह ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन भी नहीं करेगी। दुनिया में जो न्यूक्लियर एनर्जी इस्तेमाल की जाती है, वो परमाणु विखंडन यानी न्यूक्लियर फिजन से हासिल होती है, इस प्रक्रिया में रेडियोएक्टिव कचरा पैदा होता है, जबकि न्यूक्लियर फ्यूजन में किसी तरह का कचरा नहीं निकलता।

मिनी सन का स्ट्रक्चर-फंक्शनिंगः इस प्रोजेक्ट के तहत जो मिनी सूरज बनाया जा रहा है, उसमें असीमित ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए दो हाइड्रोजन परमाणुओं को बहुत अधिक वेग से एक-दूसरे की तरफ धकेला जाता है, इससे ये दोनों जुड़कर हीलियम परमाणु बनाते हैं। साथ ही इस दौरान न्यूट्रॉन भी बनता है, जिससे अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा निकलती है। प्रोजेक्ट के विशेषज्ञों का मानना है कि फ्यूजन से एनर्जी पैदा करना अपने आप में कोई मुश्किल काम नहीं है, लेकिन इसे लगातार बनाए रखना मुश्किल है। इसी तकनीक को हासिल करने के लिए वैज्ञानिक और टेक्निकल एक्सपर्ट दशकों से मेहनत कर रहे हैं। आईटीईआर प्रोजेक्ट का आकार इतना बड़ा है, जिसमें 39 बड़ी इमारतें बन सकती हैं। न्यूक्लियर फ्यूजन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली डिवाइस टोकामक का वजन 23,000 टन है। यह वजन तीन एफिल टावर के संयुक्त वजन के बराबर है। इस रिएक्टर में दस लाख घटक शामिल हैं, जो कम से कम एक करोड़ छोटे भागों में बंटे हुए हैं। रिएक्टर में लगभग 4,500 कंपनियों से जुड़े सैकड़ों वैज्ञानिक और कर्मचारी दिन-रात काम कर रहे हैं। शुरू में प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत करीब 5 अरब डॉलर थी, समय के साथ यह बढ़कर 22 अरब डॉलर हुई। अब अमेरिका के ऊर्जा विभाग का अनुमान है कि प्रोजेक्ट की कीमत 65 अरब डॉलर तक हो सकती है। इस खर्च को देखते हुए ही इसे दुनिया का सबसे मंहगा वैज्ञानिक प्रोजेक्ट कहा जा रहा है।

शुरू होने में लगेंगे कुछ वर्षः प्रोजेक्ट की शुरुआत में माना जा रहा था कि यह प्रोजेक्ट 2020 तक पूरा हो जाएगा, लेकिन जुलाई 2024 तक रिएक्टर सिर्फ पूरी तरह से असेंबल हो पाया था। अब अनुमान है कि 2039 तक यह प्रोजेक्ट काम करना शुरू कर सकता है। *

एक्सपर्ट कमेंट

इस मिनी सूरज प्रोजेक्ट का सात सालों तक नेतृत्व करने वाले फ्रांस के बर्नार्ड बिगोट ने एक बार कहा था, 'हम यहां जो करने की कोशिश कर रहे हैं, अगर उसमें सफल रहे यानी मिनी सूरज बना लिया तो फिर इंसान द्वारा बनाया गया यह सूरज कभी नहीं डूबेगा' यानी यह 'फ्यूजन पावर प्लांट' हर समय चलता रहेगा।'

भारत की है महत्वपूर्ण भूमिका

भारत इस प्रोजेक्ट का शुरू से ही हिस्सा है। हम इस प्रोजेक्ट में 10 प्रतिशत खर्च की जिम्मेदारी उठा रहे हैं। हमने इस प्रोजेक्ट के लिए 17,500 करोड़ रुपए देने का वादा किया है। साथ ही करीब 25 से 30 भारतीय वैज्ञानिक हमेशा इस प्रोजेक्ट में मौजूद होते हैं। यूरोपीय संघ प्रोजेक्ट की लागत का 45 प्रतिशत खर्च उठा रहा है। हमारा इस मायने में एक और अहम योगदान है कि रिएक्टर को ठंडा करने के लिए जिस 'क्रायोस्टेट फ्रीजर' का इस्तेमाल हो रहा है, उसे हमारी लार्सन एंड टुब्रो कंपनी ने ही बनाया है। यह क्रायोस्टेट फ्रीजर दुनिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा फ्रीजर है। यह टोकामक के अंदर सुपरकंडक्टिंग मैग्नेट और वैक्यूम वेसल के बाहर लगता है और इससे रिएक्टर को -193 डिग्री सेल्सियस तक ठंडा किया जाएगा। क्रायोस्टेट 54 यूनिट्स से मिलकर बना है, इसे 2020 में फ्रांस भेजा गया था। इस क्रायोस्टेट का वजन 3,800 टन है और इसकी ऊंचाई कुतुब मीनार की आधी है। इस फ्रीजर की वजह से प्रोजेक्ट में भारत की भागीदारी बहुत अहम हो गई है।

एआई ने शुरू किया मैन-मशीन कॉम्पिटिशन

वैज्ञानिक प्रगति आज उस मुकाम पर पहुंच चुकी है कि इंसान के द्वारा निर्मित मशीन, इंसान को ही चुनौती दे रही है। हालात ये हो गए हैं कि कई स्तरों पर एआई, इंसान को मात देने लगी है। इनके कॉम्पिटिशन का परिणाम क्या होगा, वक्त ही बताएगा।

साइंटिफिक वर्ल्ड
लोकमित्र गौतम

हालांकि दशकों से कहा जा रहा है कि इंसान और मशीन में वर्चस्व की जंग शुरू होने वाली है। लेकिन पिछले एक-डेढ़ दशक में मशीन वाकई इंसान के साथ प्रतिस्पर्धा के कई मोर्चों पर इंसान की क्षमताओं को मात देकर आगे निकल रही है।

कई मामलों में बहुत आगे है मशीनः आज डेटा प्रोसेसिंग के मामले में जीनियस से जीनियस इंसान भी एआई यानी आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस का सामना नहीं कर सकता। डेटा प्रोसेसिंग मामले में इंसान एआई के सामने कहीं नहीं टिकता है। यहां एआई इंसान से सैकड़ों नहीं हजारों गुना तेज और कुशल हो चुका है। लेकिन बात यहीं तक सीमित नहीं है। मशीन अब सिर्फ कैलकुलेट भर नहीं करती, वह सोचने में भी सक्षम है। यही नहीं इस कारण से मशीन जटिल निर्णय लेने में भी माहिर हो रही है। डीप लर्निंग, नैनो प्रोसेसिंग और न्यूरल नेटवर्क्स ने एआई की संभावनाओं को चमत्कारिक बना दिया है।

मशीन से सीख रहा इंसानः इंसान कई मामलों में न केवल एआई से बहुत कुछ सीख रहा है बल्कि उससे प्रेरित भी हुआ है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की चुनौतियों के चलते इंसान ने अपनी सोचने और समझने की क्षमता को कहीं ज्यादा तीव्र, परिष्कृत और नए आयामों तक पहुंचने के संदर्भ में निखारा है। क्योंकि इसे जंग कहें या न कहें लेकिन इंसान ने इस बात को भली-भांति जान लिया है कि अगर वह नई तकनीक को अपनाने में पीछे रहेगा तो मशीन उसे हर हाल में पछाड़ देगी। इसके बावजूद कि भले लेखन, संगीत, चित्रकला और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में एआई क्रिएटिव रोल निभाता दिख रहा हो, लेकिन यह भूमिका उसके सेल्फ डिसीजन का नतीजा नहीं है, यह उसे हासिल निर्देशों का रिजल्ट होता है। लेकिन कौन जाने जीपीटी-4, डीएएलएल-ई, डीएएलएल-ई 2 और डीएएलएल-ई 3 जैसे टूल्स के बाद मशीन ओरिजिनल क्रिएटिविटी के मामले में भी इंसान को मात देने की कोशिश करे।

लाजवाब है रोबोटिक टेक्नीकः हाल के दिनों में मशीन ने जिन और कई क्षेत्रों में इंसान को हैरान या कहें कि हतोत्साहित किया है, वह सेल्फ ड्राइविंग, ऑटोएक्टिव ड्रोन और रोबोटिक असिस्टेंस का तकनीकी क्षेत्र है। आज इंसान से कहीं बेहतर कार ड्राइविंग एआई नियंत्रित रोबोट कर रहा है। ऑटोड्राइवर ड्रोन भी इंसान के अनुमान से कहीं ज्यादा सटीक लक्ष्य पर वार कर रहा है। विभिन्न सहायता क्षेत्रों में जिस तरह की असिस्टेंस आज एआई प्रदान कर रही है, निःसंदेह वह इंसान के बस में नहीं है। कहना चाहिए आटोनोमस सिस्टम को एआई ने सिर्फ क्रांतिकारी ही नहीं बनाया हैरान करने की हद तक उपयोगी और सटीक भी बनाया है।

मैन्युफेक्चरिंग और हेल्थ केयर के मामले में भी मशीन, इंसान से किसी हद तक जंग जीत चुकी है या कहें वह अपर हैंड है। जितनी सफाई से आज कोई रोबोट, सर्जन की सर्जरी के दौरान मदद करता है, कोई भी नर्स उतनी सफाई से मदद नहीं कर पाती। लेकिन हां, एक मामले में एआई नर्स के सामने पिछड़ जाता है कि नर्स बिना किसी कमांड के भी कई निर्णय अपनी बुद्धिमत्ता से ले लेती है, जो एआई के बस में नहीं है।

कुछ घटी-कुछ बढ़ी हैं जॉब्सः एआई के कारण आज ऑटोमेशन के कई सेक्टर में इंसान के लिए जॉब या तो खत्म हो गए हैं या बहुत कम रह गए हैं। लेकिन हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि एआई ने नई इंडस्ट्रीज और रोजगार के क्षेत्र भी बनाए हैं। डेटा साइंस और मशीन लर्निंग इंजीनियरिंग, एआई विकसित इंडस्ट्रीज हैं। रोजगार के क्षेत्र में एथिक्स और लर्निंग को एआई ने नए आयाम दिए हैं।

सच तो यह है कि जिस तरह से एआई ने हाल के सालों में इंसान को चौंकाया, छकाया और कई क्षेत्रों में हराया भी है, उससे आदमी प्रेरित होकर खुद चौकन्ना हो रहा है, जिससे कि वह एआई के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके और पहली बार दुनिया में मैन-मशीन की आशंकित जंग के बजाय एक साझा युग शुरू हो। *

क्रिएटिविटी में इंसानों से पीछे मशीन

हालांकि डेटा एल्गोरिदम का निर्णय लेने के मामले में, उसके संदर्भों को एनालाइज करने में इंसान एआई से आज भी कोसों आगे है। इसी तरह देखें तो क्रिएटिविटी के मामले में भी भले एआई, इंसान को टक्कर दे रही हो, लेकिन उसकी यह टक्कर अभी क्रिएटिविटी को सिमुलेट करने तक ही सीमित है, जबकि इंसान अपनी कल्पनाशीलता से नई सोच और नए रेफरेंस विकसित करने में भी माहिर है।

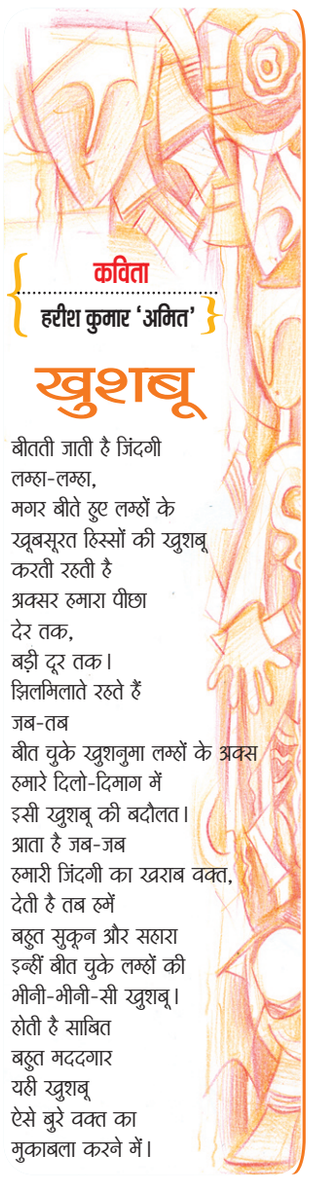

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

खुशबू

बीतती जाती है जिंदगी
लम्हा-लम्हा,
मगर बीते हुए लम्हों के
खूबसूरत हिस्सों की खुशबू
करती रहती है
अक्सर हमारा पीछा
देर तक,
बड़ी दूर तक।
झिलमिलाते रहते हैं
जब-तब
बीत चुके खुशनुमा लम्हों के अक्स
हमारे दिलो-दिमाग में
इसी खुशबू की बदौलत।
आता है जब-जब
हमारी जिंदगी का खराब वक्त,
देती है तब हमें
बहुत सुकून और सहारा
इन्हीं बीत चुके लम्हों की
भीनी-भीनी-सी खुशबू।
होती है साबित
बहुत मददगार
यही खुशबू
ऐसे बुरे वक्त का
मुकाबला करने में।

व्यंग्य / डॉ. मुकेश असीमित

आप चाहते हैं कि आपको आपकी मनचाही कुर्सी मिले, आपका सात जन्मों तक का कुर्सी-संगम बना रहे। कुर्सी को बुरी नजर से बचाव मिले, तो आप यहां दिए जा रहे फार्मूले जरूर अपनाएं।

कुर्सी वंदना

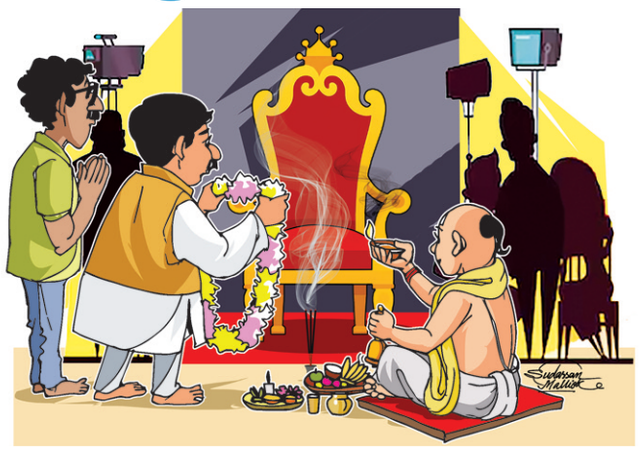

जी, अब तनिक कुर्सी प्रेमियों को भी कुछ खुशखबरी सुना दें। कुर्सी का बिछोह सबसे बड़ा गम है। कुर्सीगीरी ऐसे ही नसीब नहीं होती। अपनी कुर्सी कैसे बचाए रखनी है, बस इसी जुगत में सब कुलबुलाते रहते हैं। कुर्सी की ऊंचाई भी छोटी-बड़ी होती रहती है। आपकी कुर्सी दिन-दूनी, रात-चौगुनी अपना कद ऊंचा करे, इसके लिए हम कुछ नायाब फार्मूले लेकर आए हैं।

आप चाहते हैं कि आपको आपकी मनचाही कुर्सी मिले, आपका सात जन्मों तक का कुर्सी-संगम बना रहे। कुर्सी को विरोधियों की बुरी नजर से बचाव मिले, तो आप यहां दिए जा रहे फार्मूले जरूर अपनाएं। शर्तिया सफलता की गारंटी बिल्कुल चांदसी दवाखाने के हकीम की मर्दानगी ताकत वापस दिलाने की गारंटी जैसी।

सबसे पहले, अपने गले में रुद्राक्ष की जगह किसी खाती से 108 मनकों की कुर्सी बीड-नुमा माला बनवाएं। इसे गले में डालकर रखें। सुबह-शाम गले से उतारकर इसका जाप करें। जाप के साथ यह मंत्र उच्चारण आवश्यक है- 'ॐ कुर्स्याय नमः।'

एक बार कुर्सी प्राप्त हो जाने के बाद, जिस प्रकार से आप रंग बदलते हैं, उसी प्रकार से मंत्र जाप भी बदल लें। अब यह मंत्र जाप करना है-'कुर्सी अधिष्ठानम अक्षयं कुरु।'

इस मंत्र का अर्थ है, 'कुर्सी को स्थिर और अक्षय बनाओ।' यह मंत्र कुर्सी को स्थायित्व प्रदान करने की प्रार्थना करता है, जिससे कि वह सदैव आपके नियंत्रण में रहे और आपको उस पर से गिरने, उतरने, धकियाने या गिराने का भय न हो। यह मंत्र कुर्सीधारकों को एक आध्यात्मिक आश्वासन प्रदान करता है कि उनकी कुर्सी उन्हें आत्मविश्वास और शांति प्रदान करेगी।

कुर्सी प्राप्त होने के बाद यदि कुर्सी पूजन महोत्सव रखा जाए, तो आपकी कुर्सी की स्थिरता की शत-प्रतिशत गारंटी है।

मान लीजिए, आपका नया-नया प्रमोशन हुआ है या आपको जुगाड़ लगाकर मंत्री पद प्राप्त हुआ है। नई नवेली कुर्सी आपको प्राप्त हुई है। पता लगा कि कुर्सी-संगम को गिने-चुने चार दिन भी नहीं हुए कि आ गया कोई न कोई विलेन आपके इस संगम को गम में बदलने के लिए।

पहली बात तो यह कि इतनी आसानी से कहां यह कुर्सी मिलती है? भाई, बड़े जतन से, जोड़-तोड़, जुगाड़ और कुछ नए-पुराने वादों की मिश्रित खाद से यह कुर्सी हासिल की गई है। अब, इससे पहले कि कुर्सी के साथ रंगरेलियां मनाना शुरू करें, क्यों न एक बार कुर्सी पूजन को विधिवत निपटा लें? तो चलिए, आज हम लोग कुर्सी का पूजन करेंगे, विधि-विधान से। पंडित जी को बुला लें, शुरू में आप मुझे भी बुला सकते हैं। आजकल तो वैसे भी ब्रिज कोर्स का जमाना है। सोचा है, डॉक्टरी बढ़िया चले न चले, ये कुर्सी-पूजन कर्मकांड से ही कमा लेंगे। तो हम कुर्सी के लिए विशेष मंत्रोच्चार करेंगे, ताकि कुर्सी पर किसी की नजर न उलझे और इसमें नवग्रह-शक्ति का प्रयोग करके इसे और भी अजेय बनाया जा सके।

मंत्र इस प्रकार है- 'ॐ कुरसीयै नमः, ॐ बैठकाय स्थायिनमः सिद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा।' इस मंत्र का अर्थ है कि कुर्सी पर बैठने वाले को स्थायित्व प्राप्त हो और कोई भी चुनावी हवा इसे उड़ा न सके। पंडित जी इस कुर्सी के चारों ओर लोभ, मोह, काम, क्रोध के फूल चढ़ाएंगे, जो राजनीति के जरूरी तत्व हैं।

अब पूजा का मुख्य आकर्षण- चढ़ावा।

चढ़ावे में मंत्री जी से अपने पूर्व वादों की माला, जनता के सपनों को चूर कर बनाए गए बुरादे की मिठाई, और विपक्ष की आलोचनाओं की धूप-बाती अर्पित करें। ये सब कुर्सी की सेवा में पेश करने से कुर्सी की ऊर्जा और बढ़ जाती है।

अंत में, सभी आरती उतारें, जिसमें कुर्सी के चारों ओर मीडिया के कैमरे और राजनीतिक समर्थकों की फ्लैश लाइट्स भी शामिल करें। ये सब प्रथम पूज्य देव हैं, जो आपकी कुर्सी को टिकाए रखने में मदद करेंगे। आरती के बाद सभी मिलकर प्रसाद रूप में 'सत्ता का स्वाद' मिश्रित मावे की मिठाई का भोग लगाएं।

कुर्सी पूजन के पश्चात माहौल को और उत्सवमय बनाने के लिए 'कुर्सी उत्सव' का आयोजन कर सकते हैं। इस आयोजन का प्रस्ताव और खर्च किए जाने वाले फंड को हाई लेवल मीटिंग में पहले ही स्वीकृत करवा लें। कुर्सी उत्सव को सालाना वार्षिक उत्सव की तरह ऑफिस प्रोसीडिंग में शामिल करवाया जा सकता है। कुर्सी के स्वागत के लिए एक विशेष 'कुर्सी रथ' का आयोजन किया जाए, जिसे समर्थकों द्वारा फूलों और गुब्बारों से सजाया जाए। इस रथ को उन चार नेताओं से खिंचवाया जाए, जिन्होंने आपकी कुर्सी को हथियाने में खींचातानी की थी। रथ यात्रा के दौरान बैंड-बाजे बजवाएं और 'कुर्सी महारानी की जय' के नारे लगवाएं।

कुर्सी की महिमा को बखान करते हुए, एक विशेष भक्ति-गीत को गवैयों से गवाया जाए, जिसमें गीत के बोल हो सकते हैं-'कुर्सी तेरे साथ में, सब कुछ अपने हाथ में।'

अगर दिल्ली तक आपकी पहुंच है, तो कृपया इस भक्ति गीत को भी लोकतंत्र के अधिकृत गीत की मान्यता दिलवा दें। इस बहाने गीत की रॉयल्टी मुझे मिलती रहेगी, तो मेरा भी रोटी-पानी का जुगाड़ हो जाएगा।

आप चाहें तो एक मजेदार 'कुर्सी दौड़' का आयोजन करवा सकते हैं, वैसे भी यह तो देश का राष्ट्रीय खेल घोषित हो जाना चाहिए था, अब तक। इस खेल में तो सभी नेता पहले से ही माहिर हैं, इसलिए ज्यादा कुछ बताने की जरूरत नहीं होगी।

सभी नेताओं को एबीएस अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठकर दौड़ना होगा। नेता बिना कुर्सी के अपंग हैं, दीन-हीन और बेसहारा हैं। आप उन्हें दौड़ाएंगे तो वे एक कदम भी न चल सकेंगे। यह बहुत मजेदार खेल होगा, देखना कि कैसे सभी नेता अपनी-अपनी कुर्सियों को धकेलते हुए फिनिश लाइन की ओर बढ़ रहे होंगे।

समारोह की अंतिम प्रतिस्पर्धा में, आप 'कुर्सी टग ऑफ वॉर' जैसा खेल रख सकते हैं या रूमाल-झपट्टा की तरह 'कुर्सी-झपट्टा' जैसा कोई खेल- यह आपकी मर्जी। कुर्सी को बीच में रस्से से बांध दीजिए, और फिर दोनों तरफ से दोनों गुटों के नेता रस्सी खींचें। *

लघुकथा / सरस्वती रमेश

अपना-अपना मुनाफा

महिला ने बड़े हुलस के साथ दुकानदार से पूछा, 'यह वाला हार कितने का है?' महिला की आंखों की चमक बता रही थी कि वह इस हार को लेकर ही रहेगी।

दुकानदार ने इस चमक को पढ़ लिया था। वह हार महिला की ओर बढ़ाते हुए बोला, 'तीन सौ रुपए!'

हार को हाथ में लेकर महिला ने उसे ललचाई आंखों से देखा। उलट-पलट कर ध्यान से उस मल्टी कलर हार का मुआयना किया। मन ही मन बोली, 'यह तो वही हार है, जो मैंने कुछ दिन पहले ऑनलाइन साइट पर देखा था। वहां इसकी कीमत 700 रुपए थी और यहां यह सिर्फ 300 में मिल रहा है। यानी आधे से भी कम कीमत पर। मुझे कुल 400 रुपए का फायदा हो रहा है।'

'भैया यह हार पैक कर दीजिए।' कहते हुए उसने तीन सौ रुपए पर्स से निकाल कर दुकानदार के सामने काउंटर पर रख दिए।

दुकानदार ने मन ही सोचा, 'यह हार तो मैं दो सौ का भी दे सकता था, लेकिन इस महिला ने कम करने को कहा ही नहीं। आज तो एक ही हार पर सौ रुपए का अतिरिक्त मुनाफा हो गया।' *

23 feb ravivar page 2 FINAL_Layout 1 21-Feb-25 6:46 PM Page 1

हरिभूमि रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रविवार 23 फरवरी 2025
विविधा P-2

धार्मिक स्थल
जगत नारायण भारद्वाज

भारत के चारों कोणों पर स्थित भव्य मठों में से एक श्रंगेरी मठ कर्नाटक में स्थित है। आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित इस मठ में कई ऐसे भव्य मंदिर हैं, जो धार्मिक आस्था का तो केंद्र हैं ही, वास्तुकला के भी अद्वितीय उदाहरण हैं। इस मठ और इसके कुछ मंदिरों के बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

प्राचीन-भव्य-विलक्षण
श्रंगेरी मठ के मंदिर

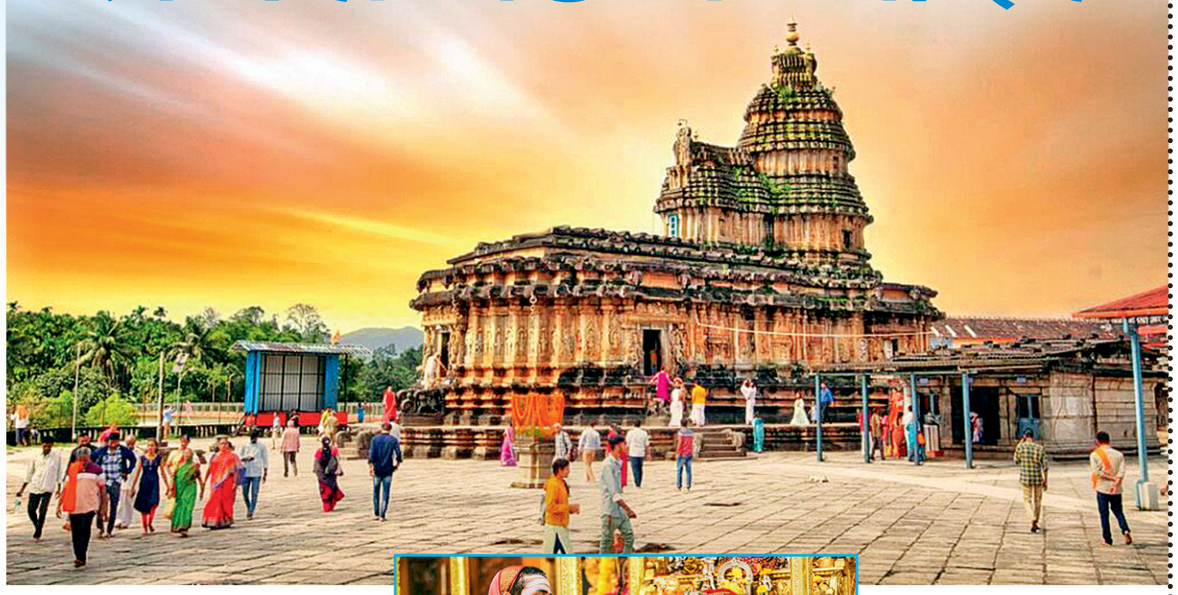

भारत की विविधवर्णी धार्मिक आस्थाओं और संस्कृति का दिग्दर्शन भारत के मंदिरों में निहित है। उत्तर से दक्षिण तक विभिन्न स्थानों पर स्थित हमारे मंदिरों में धार्मिक ज्ञान के अतिरिक्त चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की ओर प्रेरित करने का संदेश भी निहित है।

शंकराचार्य ने की श्रंगेरी मठ की स्थापना

आदि गुरु शंकराचार्य ने चारों धामों की स्थापना में सर्वप्रथम मंडन मिश्र को शास्त्रार्थ में पराजित कर दक्षिण भारत में तुंगा नदी के तट पर श्रंगेरी शारदा पीठ की स्थापना की थी। वर्तमान कर्नाटक राज्य के चिकमंगलूर में यह मठ स्थित है। मंडन मिश्र को सुरेश्वराचार्य नाम देकर, यहां धर्म प्रचार के लिए उनको मठ का प्रथम आचार्य बनाया। तभी से इस श्रंगेरी मठ की सनातन धर्म के मतावलंबियों में बहुत प्रतिष्ठा और मान्यता है।

शारदांबा मंदिर

श्रंगेरी मठ के परिसर में कई मंदिर स्थित हैं। पहला मंदिर मां शारदांबा को समर्पित है। माना जाता है कि यहां ज्ञान की देवी मां शारदा की सबसे प्रचीन प्रतिमा स्थापित है। सोने से बनी मां शारदा की प्रतिमा, बहुत भव्य और मनमोहक है। इस क्षेत्र ही नहीं इसके आस-पास के इलाकों में रहने वाले लोग भी अपने बच्चों को विद्याध्ययन के आरंभ का संस्कार, मां शारदांबा का आशीर्वाद लेने और उनके सान्निध्य में पूर्ण कराने आते हैं। मंदिर की परिक्रमा में सोने और चांदी से बनी मयूर, वृषभ, गरुड़, सिंह, अश्व, हाथी, वीणा और कामदेव की सुंदर मूर्तियां स्थापित की गई हैं।

भगवान चंद्र मौलीश्वर की पूजा-आराधना करते आचार्य

विद्याशंकर मंदिर

शारदांबा मंदिर के बाहर, बारहवीं सदी में बने विद्याशंकर मंदिर की शिल्पकला वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है और देखने में अनुपम है। यह मंदिर विजयनगर साम्राज्य के यशस्वी राजा हरिहर-बुक्का द्वारा बारहवीं सदी में बनवाया गया था। यह मंदिर रथनुमा संरचना पर बना है। ऐसी मान्यता है कि रथ के चारों पहिए धरती के अंदर स्थित हैं। भगवान शिव को समर्पित इस मंदिर की विशेषता यह है कि इसमें बने बारह स्तंभ, बारह राशियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक संक्रांति पर सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है, उस राशि के स्तंभ पर सूर्य की किरण क्रमानुसार पड़ती है। मंदिर के चारों ओर की दीवारों पर पौराणिक कथाओं को दर्शाती हुई अनेक मूर्तियां उत्कीर्ण की गई हैं। इनमें एक प्रतिमा तीर्थंकर भगवान महावीर की भी है, जो हमारे राष्ट्र की धार्मिक एकात्मता का श्रेष्ठ उदाहरण है।

करी जाती है विधिवत पूजा

श्रंगेरी मठ के परिसर में स्थित मां शारदांबा का भव्य मंदिर

मठ के वर्तमान आचार्य पूज्य भारती तीर्थ, रात्रि के समय स्वयं अपने निवास के समीप बने एक विशाल प्रांगण में भगवान चंद्र मौलीश्वर की पूजा करते हैं। सैकड़ों भक्तों की उपस्थिति में दर्जनों विद्वान ब्राह्मणों द्वारा समवेत स्वर में ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के मंत्रों के साथ भगवान शिव की पूजा की जाती है। इन पवित्र धार्मिक स्थलों के दर्शन अपने आप में अलौकिक अनुभव कराते हैं।

कब जाएं-कहां ठहरें

श्रंगेरी कर्नाटक राज्य के मंगलौर से 108 और उडुपी से 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां अनेक निजी होटल्स के अतिरिक्त मठ की ओर से कम शुल्क में ठहरने और भोजन की निःशुल्क उत्तम व्यवस्था है। यूं तो यहां दर्शन के लिए वर्ष में कभी भी आया जा सकता है, लेकिन सर्दी के अलावा गर्मी से पूर्व का वासंती मौसम यहां आने के लिए सबसे अनुकूल होता है।

मठ स्थापना से जुड़ी पौराणिक मान्यता

श्रंगेरी, श्रंगी ऋषि के नाम पर तुंगा नदी के तट पर बसा एक नगर है। ये वही महान ऋषि के पुत्र श्रंगी थे, जिन्होंने राजा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। मान्यता है कि वे राजा दशरथ के दामाद थे, जिनका भगवान राम की बहन शांता के साथ विवाह हुआ था। जब आद्य शंकराचार्य नदी पर आए तो उन्होंने यहां एक अद्भुत दृश्य देखा। एक सांप मादा मेंढक के ऊपर, जो गर्भवती थी, अपने फन से छाया किए हुए था। इस करुणामय दृश्य को देखकर ही उन्होंने यहां मठ स्थापित करने का निर्णय लिया। यह दृश्य आज भी नदी के तट पर पाषाण रूप में मौजूद है।

ईश्वरीयगिरि मंदिर

मठ से लगभग 200 मीटर की दूरी पर श्रंगी ऋषि के पिता विभांडक ऋषि का ईश्वरीयगिरि मंदिर है। यहां 165 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। मुख्य सड़क पर बाहर 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का मंदिर भी है। यह होयसाल वंश के राजाओं ने बनवाया था। मंदिर में सभी 24 तीर्थंकरों की छोटी मूर्तियों के साथ पार्श्वनाथ की बड़ी प्रतिमा के दोनों ओर सर्प सुशोभित हैं। ऐसी दुर्लभ प्रतिमा शायद ही अन्यत्र हो।

श्रंगेश्वर मंदिर

मठ से दस किलोमीटर की दूरी पर किगा गांव है। यहां श्रंगी ऋषि को समर्पित श्रंगेश्वर मंदिर स्थित है। मंदिर भारत के पौराणिक अतीत का जागृत प्रमाण है। इन्हें बारिश का देवता माना जाता है। मान्यता है कि इस क्षेत्र में जब वर्षा नहीं होती तो इस मंदिर में इनकी विशेष पूजा की जाती है। *

समस्त शिवभक्तों के लिए वर्ष का सबसे बड़ा पर्व होता है महाशिवरात्रि। इस दिन पूर्ण समर्पण से पूजन करने पर शिव जी की कृपा प्राप्त होती है। आनंदेश्वर भगवान शिव के स्वरूप और उनसे संबद्ध प्रतीकों के निहितार्थ के बारे में जानिए।

शिव आराधना का महापर्व
कल्याणकारी महाशिवरात्रि

आस्था
पावनी

महाशिवरात्रि कल्याण की रात्रि है। अपने शिवत्व के जागरण की रात्रि है। इस जागरण के लिए सबसे पहले साधन, व्रत, नियम, उपवास, प्रवचन, संत-सन्निधि आदि से अंतःकरण की शुद्धि हो जाती है। ऐसा होने से ही तो जागरण होगा। जब हम अपने शिवत्व जागरण की बात कहते हैं, तब यह अंतर्निहित है कि हम भी शिव के ही अंश हैं। हम भी अविनाशी (जिसका विनाश न हो) ही हैं। आत्मा चूंकि ऊर्जा है, तो उसका नाश होगा नहीं, इसलिए अविनाशी कहा जाता है।

शिव हैं आनंद के ईश्वरः श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है, 'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।' अर्थात वह मेरा ही अंशी है, मुझसे भिन्न नहीं है। वे परम आत्मा हैं और हम आत्मा हैं। ऐसे में दिव्यगुणों से अनुप्राणित होकर हम देवात्मा तो हो ही सकते हैं। कहा भी गया है कि मनुष्य देवता और राक्षस के बीच का पुल है। ऊपर उठ जाए तो देवता और नीचे गिर जाए तो राक्षस। अभी तो बस हमारे शरीर में प्राण हैं, इसलिए हम प्राणी हैं। प्राण निकले, निर्वाण हो उससे पहले दिव्यगुणों से भरकर दिव्यप्राणी या दिव्यता से भरकर 'देवता' हो सकते हैं। जब ऐसा हो जाता है, तब जीवन मधुर हो जाता है, क्लेश और संताप मिट जाते हैं और जब संताप मिट जाते हैं, तो आनंद का उद्रेक आता है। हम नंदित हो जाते हैं, नंदी हो जाते हैं। नंदी को शिव की सवारी, जब हम कहते हैं तो उसका प्रतीकात्मक अर्थ है–शिव अर्थात सर्वकल्याणकारी सत्ता की सवारी। इसलिए तो शिव को नंदीश्वर अर्थात 'आनंद का ईश्वर' कहा गया है। अतः, नंदी बैल को देखकर हमें इस प्रतीक को समझना चाहिए।

त्रिशूल-धतूरा के निहितार्थः शिव से जुड़े सभी प्रतीकों को सही अर्थ में समझने की आवश्यकता है। त्रिशूल हमारी त्रिगुणात्मक (सत्त्व, रजस, तमस) प्रकृति है, जो एक दंड पर साधित रहती है। भूत-गण कुछ नहीं, अपितु काम, क्रोध, लोभ, मद और मोह के पंच-भूत हैं, जिन्हें उचित ही विकराल रूप दिया गया है। ये पंचभूत प्रतीकों में सौम्य रूप पा ही नहीं सकते हैं। शिव पूजन में जो धतूरा हम अर्पित करते हैं, वह अपने अंदर के विषैले तत्त्व को अर्पित कर देने का व्यंजक है, जिससे जीवन में मधुरता आए। कहा भी गया है, 'मधुरातायते मधुरक्षरन्ति सैंधवा।' शिव के पास रुद्रवीणा है। वह उसका वादन करते हैं, जिसे उनके अनन्य भक्त रावण द्वारा बनाया गया था। सर्प उनकी देह से लिपटे रहते हैं। त्रिशूल उनका अस्त्र है। यह त्रिशूल त्रयी का प्रतीक है। नृत्य करते समय वह डमरू थामे रहते हैं। उनके डमरू का नाद इस ब्रह्मांड की ऊर्जा के कंपन को प्रतिध्वनित करता है। नटराज शिव इस सृष्टि के कण-कण में समाए हुए हैं।

पूजन में बिल्वपत्र की महत्ताः बिल्व वृक्ष को शिव जी का ही एक स्वरूप माना गया है। इसका एक नाम श्रीवृक्ष भी है। श्री महालक्ष्मी का एक नाम है। इस वृक्ष की जड़ों में देवी गिरिजा, तने में देवी महेश्वरी, शाखाओं में देवी दक्षायनी, पत्तियों में देवी पार्वती, फूलों में मां गौरी और फलों में देवी कात्यायनी वास करतीं हैं। पत्तियों में देवी पार्वती का वास होने से शिवलिंग पर इसे खासतौर पर चढ़ाया जाता है। शिवमहापुराण में इसका महत्व खासतौर से बताया गया है। साथ ही बताया गया है कि बिना बिल्वपत्र के शिवपूजा अधूरी होती है। वहीं, अगर शिवजी की पूजा के लिए कई तरह की चीजें उपलब्ध न भी हों और सिर्फ एक बिल्वपत्र चढ़ा दिया जाए तो उससे पूजा का पूरा फल मिलता है। पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक जब देवी पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए तपस्या और पूजा की थी तब सबसे पहले उन्होंने ही भगवान शिव को बिल्वपत्र चढ़ाया था।

महाशिवरात्रि की महिमाः शिव आराधना की दृष्टि से महाशिवरात्रि की विशेष महत्ता है। जब सर्वव्यापक, सर्वसमर्थ, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान, अच्युत, अखंड, रसप्रद, सुखरूप, आनंदस्वरूप, विपत्तिभंजक, अघनाशक, दुःखहर्ता, सुखकर्ता, मंगलमूरत, करुणानिधान, पतितपावन भगवान शिव (आशुतोष) की पूर्ण समर्पण से भक्ति की जाती है, तो वे जल्द (आशु) ही प्रसन्न (तुष्ट) हो जाते हैं। तो आइए, इस महाशिवरात्रि, उस शिव का स्मरण करें, अपने अंदर के शिवत्व का जागरण करें। ॐ नमः शिवाय। *

लाइफस्टाइल
शिखर चंद जैन

अच्छा जॉब, इनकम होने के बावजूद आज की अधिकांश युवा पीढ़ी के पास फ्यूचर सेविंग्स की प्लानिंग का अभाव दिखता है। इसकी क्या वजहें हैं और इन पर कैसे करें कंट्रोल, जानिए।

युवा पीढ़ी की फितरत
गुड इनकम-नो सेविंग

एक बार बस यात्रा के दौरान मेरे बगल में बैठे एक बुजुर्ग सज्जन किसी मित्र सहयात्री को अपनी पीड़ा कुछ इस तरह बता रहे थे, 'हमार बचवा बहुते कमात है। पर पॉकेट में कुछो नहीं जात है। जौन पैसा आवत है, सब ही उड़ाए जात हैं।' उनकी आवाज में हल्की तल्खी, साथ-साथ पीड़ा भी थी। बस में ज्यादा यात्री नहीं थे इसलिए सभी यात्रियों ने उनकी बात को सुन लिया था। मैंने चारों तरफ नजर घुमाई तो पाया कि अधिकतर लोग मौन भले ही थे पर उनकी बात से सहमत नजर आ रहे थे। एक सज्जन बोल पड़े, 'यह लाइफस्टाइल क्रीप्स हैं। ज्यादातर यंगस्टर्स समझते ही नहीं कि लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन उनकी जिंदगी को बर्बाद कर देगा। कुछ कहो तो मुंह फुला लेते हैं।'

आपके भी मन में सवाल उठ रहा होगा कि लाइफस्टाइल क्रीप और लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन क्या होता है?

लाइफस्टाइल क्रीप या इन्फ्लेशनः माधवी एक मल्टीनेशनल कंपनी में अच्छे पद पर काम करती है। उसकी सैलरी अच्छी खासी है और समय-समय पर प्रमोशन-इंक्रीमेंट भी मिलता रहता है। लेकिन उसकी बढ़ती हुई इनकम के साथ-साथ खर्च भी बढ़ता चला जाता है। क्योंकि हाथ में ज्यादा पैसा देखकर उसकी खर्च करने की आदतें भी बदलती जाती हैं। नतीजतन वह हमेशा अपने घर खर्च, लाइफस्टाइल च्वॉइस और फाइनेंशियल गोल्स के बीच संतुलन बैठाने में खुद को परेशान और उलझी हुई महसूस करती है। आय बढ़ने के साथ-साथ खर्च को नियंत्रित न रखकर बढ़ाते रहने और बचत की प्रवृत्ति पर ध्यान न देने की यही प्रवृत्ति 'लाइफस्टाइल क्रीप' या 'लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन' कहलाती है।

क्यों होता है लाइफस्टाइल इन्फ्लेशनः बढ़ती आकांक्षाओं और सोशल स्टेटस को ऊंचा रखने के फिराक में अकसर युवा लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन का शिकार हो जाते हैं। कॉर्पोरेट कंपनियां, बड़े ब्रांड, सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर, विज्ञापनों का मायाजाल और साथ ही दिखावे की संस्कृति ने मिलकर हमें खुद के वश में ना रहने देने के लिए मानो बीड़ा उठा रखा है। ऐसे में जो व्यक्ति योजना बनाकर नहीं चलता, अपने वास्तविक लक्ष्यों के प्रति समर्पित नहीं रहता, वह आसानी से इनके झांसे में आ जाता है।

पीयर प्रेशर भी है वजहः न्यू एज के लोग पीयर प्रेशर के कारण भी बेतहाशा खरीदारी करते हैं। ब्यूटी, फिटनेस, वेलनेस को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करने वाली सोशल मीडिया रील्स और अन्य कंटेंट्स नई पीढ़ी को साज-सज्जा और फिटनेस पर जरूरत से ज्यादा महंगे प्रोडक्ट्स खरीदने को उकसाते हैं। तमाम सुविधाओं वाली सोसायटीज या कॉम्प्लेक्स में महंगे फ्लैट्स खरीदना, जिनकी कीमत आसमान छू रही है, महंगी कारें, ब्रांडेड कपड़े, जूते, चश्मा, मोबाइल आदि खरीदना और इन्हें बार-बार बदलना पॉकेट पर भारी पड़ता चला जाता है। नतीजतन कई बार युवा अवसाद और तनाव में घिर जाते हैं।

कैसे करें कंट्रोलः अपनी जीवनशैली में कुछ आदतों को छोड़कर और कुछ आदतें अपनाकर आप लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन जैसी सिचुएशन से बचे रह सकते हैं। गैरजरूरी खर्च पर आपका नियंत्रण बेहद जरूरी है। खर्च नियंत्रित करने और बचत करने के लिए कुछ उपाय-

- हर महीने का बजट तय करें और रेंट, ग्रॉसरी, यातायात, मेडिसिन आदि के खर्चों को प्राथमिकता देते हुए अनावश्यक खर्चों पर पूरी तरह नियंत्रण रखें।
- अपनी वित्तीय स्थिरता और सुरक्षित सेवानिवृत्त जीवन की प्लानिंग अभी से करें।
- हर माह निवेश और बचत के पैसे अलग रखें।
- बोनस या एक्स्ट्रा इनकम को अपने बड़े वित्तीय लक्ष्य के लिए इकट्ठा करें।
- ज्यादा शॉपिंग एप्स मोबाइल में ना रखें। सिर्फ ग्रॉसरी और मेडिसिन के एक-दो जरूरी और उपयोगी एप्स पर्याप्त हैं। *

सिने-शख्सियत
कैलाश सिंह

पिछली सदी के साठ-सत्तर के दशक में बॉलीवुड में म्यूजिक का गोल्डेन इरा रचने वाले संगीतकारों में ओ.पी. नैय्यर का नाम भी शामिल है। सैकड़ों बेमिसाल धुनों के सर्जक ओ.पी. नैय्यर की पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ बहुत उतार-चढ़ावों से भरी थी। इस पर एक नजर।

यादगार धुनों के रचनाकार बेमिसाल संगीतकार ओ.पी. नैय्यर

फिल्म 'कश्मीर की कली' में नैय्यर ने रची यादगार धुनें

'नया दौर' के गीतों को सुरों में सजाया ओ.पी. नैय्यर ने

हिंदी फिल्म संगीत की दुनिया में ओ.पी. नैय्यर के नाम से मशहूर, ओमकार प्रसाद नैय्यर का जन्म 16 जनवरी 1926 को लाहौर में हुआ था। उन्होंने संगीत की कोई औपचारिक ट्रेनिंग नहीं ली थी, बावजूद इसके संगीत की अपनी एक विशिष्ट शैली विकसित की। उनके संगीत से सजे गाने आज भी खूब सुने जाते हैं। हिंदी गानों में पंजाबी रिद्म को लाने का श्रेय ओ.पी. नैय्यर को ही जाता है। ओ.पी. नैय्यर के ड्रेसअप की एक खास स्टाइल थी, वे हमेशा व्हाइट ड्रेस और हैट के साथ सार्वजनिक स्थलों पर नजर आते थे।

लता मंगेशकर से नहीं गवाया गानाः उन दिनों हर संगीतकार अपनी फिल्म में कम से कम एक गीत लता मंगेशकर की आवाज में जरूर रखना चाहता था। लेकिन ओ.पी. नैय्यर इस मामले में अपवाद थे। उन्होंने अपने संगीत-निर्देशन में लता मंगेशकर से कभी कोई गाना नहीं गवाया। नैय्यर साहब के मन में लता मंगेशकर के प्रति कितनी कड़वाहट थी, इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि मध्य प्रदेश सरकार द्वारा लता मंगेशकर के नाम पर दिया जाने वाला पुरस्कार लेने से भी उन्होंने इंकार कर दिया था। दोनों के बीच कड़वाहट से संगीत की दुनिया बेहतरीन धुन और नायाब आवाज के संगम से बन सकने वाले सदाबहार नगमों से वंचित रही।

आशा भोसले से गवाए कई गानेः ओ.पी. नैय्यर जहां एक ओर लता मंगेशकर से एक भी गीत नहीं गवाने के अपने प्रण पर ताउम्र अटल रहे, वहीं दूसरी तरफ उन्होंने लता की ही बहन आशा भोसले की आवाज में सैकड़ों सदाबहार गीत रिकॉर्ड कराए। आशा भोसले के साथ ओ.पी. नैय्यर ने लंबे समय तक काम किया और कई यादगार गाने रचे। उस समय तक अपनी बड़ी बहन लता के साए में रह रहीं आशा को नैय्यर ने यह विश्वास दिलाया कि संगीत की दुनिया में अपना अलग रास्ता, अलग मुकाम वह स्वयं बना सकती हैं। ओ.पी. नैय्यर के मार्गदर्शन में आशा भोसले ने अपनी अलग और आकर्षक गायन शैली विकसित की। उन्होंने न सिर्फ कैबरे-शैली गायन में महारत हासिल की बल्कि उसमें प्रेम का भाव भी वह लेकर आईं। नैय्यर के संगीत निर्देशन में उन्होंने मोहम्मद रफी के साथ जो युगल गीत गाए, वे सभी अपने समय में चार्टबस्टर थे और आज भी लोकप्रिय हैं। 'कश्मीर की कली', 'तुम सा नहीं देखा' जैसी फिल्मों के गीत तो आज तक लोगों की जुबान पर हैं। 'नया दौर' का युगल गीत 'उड़े जब-जब जुल्फें तेरी' को कौन भूल सकता है, जिसमें ओ.पी. नैय्यर के म्यूजिक डायरेक्शन में मोहम्मद रफी-आशा भोसले ने कमाल का गाना रचा था।

आशा भोसले से भी हो गई दूरीः एक समय तक जबर्दस्त हिट रही आशा भोसले और ओ.पी. नैय्यर की संगीतमय जोड़ी का अंत भी कड़वाहट भरा हुआ। उन दोनों की पहली मुलाकात 1952 में 'छम छमा छम' गीत की रिकॉर्डिंग पर हुई थी। लेकिन लंबे प्रोफेशनल साथ के बावजूद 1972 में वे कड़वे अनुभव के साथ एक-दूसरे से अलग हो गए और फिर दोनों ने कभी भी साथ काम नहीं किया। दोनों का साथ अंतिम गीत 'चैन से हमको कभी आप ने जीने न दिया' था। इस गीत के लिए आशा भोसले को 1974 में सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर अवार्ड मिला था। नैय्यर ने आशा की तरफ से यह अवार्ड स्वीकार किया। लेकिन ऐसा कहते हैं कि उसे बाद में आशा भोसले को देने की बजाय रास्ते में ही फेंक दिया था। फिल्मी गलियारों में उस दौर में यह चर्चा थी कि भावनात्मक रिश्तों की वजह से नैय्यर और आशा के बीच दूरियां बढ़ गई थीं।

पर्सनल लाइफ में रहे कई उतार-चढ़ावः ओ.पी. नैय्यर पहले लाहौर (देश विभाजन से पहले) रेडियो स्टेशन में गायक हुआ करते थे। उन्हीं दिनों उनकी मुलाकात सरोज मोहिनी से हुई, जो एक स्टेज डांसर थीं। सरोज ने ही 'प्रीतम आन मिलो' गीत के बोल लिखे थे, जिसे सुरों में सजाया था ओ.पी. नैय्यर ने। बाद में नैय्यर ने सरोज से शादी कर ली थी। दोनों के तीन बेटियां सोनिया, अन्नपूर्णा, लक्ष्मी और एक बेटा आशीष हुए। लेकिन वर्ष 1979 में ओ.पी. नैय्यर अपने परिवार के चर्चगेट (मुंबई) स्थित मकान से अलग हो गए। 1989 से विरार में गायिका माधुरी जोगलेकर के साथ रहने लगे। कुछ समय बाद उनका माधुरी से भी अलगाव हो गया और वे ठाणे में रानी नखवा व उनके परिवार के साथ पेइंग गेस्ट के रूप में रहने लगे। उन्होंने अपनी मैय्यत में अपने परिवार की शिरकत पर प्रतिबंध लगा दिया था। दिल का दौरा पड़ने से 28 जनवरी 2007 को इस सदाबहार संगीतकार का निधन हो गया।

ओ.पी. नैय्यर की पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ चाहे जैसी भी रही हो, इसमें कोई दो राय नहीं कि वह यादगार नगमे देने वाले महान संगीतकार थे। भारत सरकार ने उनकी स्मृति में 3 मई 2013 को एक डाक टिकट जारी किया। *

लता मंगेशकर से कड़वाहट की वजह

एक स्वतंत्र संगीतकार के रूप में ओ.पी. नैय्यर की पहली फिल्म 'आसमान' थी। इस फिल्म में लता मंगेशकर को गाने के लिए अनुबंधित किया गया था। कहते हैं कि नैय्यर और उनके बैकग्राउंड साजिंदे रिकॉर्डिंग करने के लिए घंटों तक लता मंगेशकर की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन वह नहीं आईं। इससे नाराज होकर ओ.पी. नैय्यर ने कसम खाई कि उनके संगीत निर्देशन में लता कभी गाना नहीं गाएंगी। हालांकि लता मंगेशकर ने दावा किया था कि वह नैय्यर के स्टूडियो इसलिए नहीं पहुंच पाईं क्योंकि वह एक अन्य रिकॉर्डिंग में व्यस्त हो गई थीं। 1950 के दशक की शुरुआत में हुई इस घटना के कारण दो महान संगीत रत्नों के बीच जो गलतफहमी उत्पन्न हुई, वह कभी खत्म न हो सकी।